पर्यावरणीय नीतिशास्त्र एवं पारिस्थितिकी विज्ञान : एक विमर्श

डॉ0 मनोज कुमार यादव

मानव प्राचीन समय से अपने चारों ओर के परिवेश में रूचि रखता आया है। अपने अतीत के अनुभवों के द्वारा वह धीरे–धीरे पर्यावरणीय ज्ञान में वृद्धि करता रहा। धीरे–धीरे उसका पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान का भण्डार इतना वृहद हो गया कि इसे एक अलग विज्ञान के रूप में सृजित करने की आवश्यकता महसूस होने लगी। इस प्रकार इस सदी के आरम्भ में पर्यावरण अध्ययन के व्यवस्थित रूप ''पर्यावरण विज्ञान या पारिस्थितिकी विज्ञान का जन्म हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह विज्ञान के क्षेत्र में एक नवीन संकल्पना है। इसी तरह नीतिशास्त्र अथवा नीतिविज्ञान मानव के आचार–व्यवहार का शास्त्र है। उसके अन्तर्गत इस बात का विवेचन किया जाता है कि मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उसके लिए क्या वांछनीय तथा शुभ है। उसके कौन से कर्म उचित तथा कौन से कर्म अनुचित है तथा उचित– अनुचित, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य, शुभ–अशुभ आदि की कसौटी क्या है, अर्थात् किसी कर्म को किस आधार पर उचित या अनुचित कहा जा सकता है। यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि नीतिशास्त्र के जिस स्वरूप की चर्चा हम कर रहे हैं उसे मानकीय नीतिशास्त्र या परम्परागत नीतिशास्त्र के रूप में जाना जाता है, और इसके अन्तर्गत संकल्प स्वातंत्र्य से युक्त ऐच्छिक कर्मों को ही नैतिक मूल्यांकन के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। अर्थात् केवल (संकल्प स्वातन्त्र्य से युक्त ऐच्छिक कर्म) मानव जगत तक ही सीमित है। किन्तु बीसवीं शताब्दी में उत्पन्न भयावह परिस्थितिकीसंकट ने नीतिशास्त्रीय चिंतकों को झकझोर दिया। उन्हें अब यह अहसास होने लगा कि परम्परागत नीतिशास्त्र के द्वारा मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्धों की व्याख्या नहीं हो सकती जो केवल मानव जगत तक सीमित न हो अपितु उसमें मानवेतर जगत भी सम्मिलित हो। अतः बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एक नया नीतिशास्त्र अस्तित्व में आया जिसे अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र या व्यावहारिक नीतिशास्त्र अथवा पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।